बाघ का बच्चा
उड़ीसा की लोककथा

बाघ का बच्चा

उड़ीसा की लोककथा
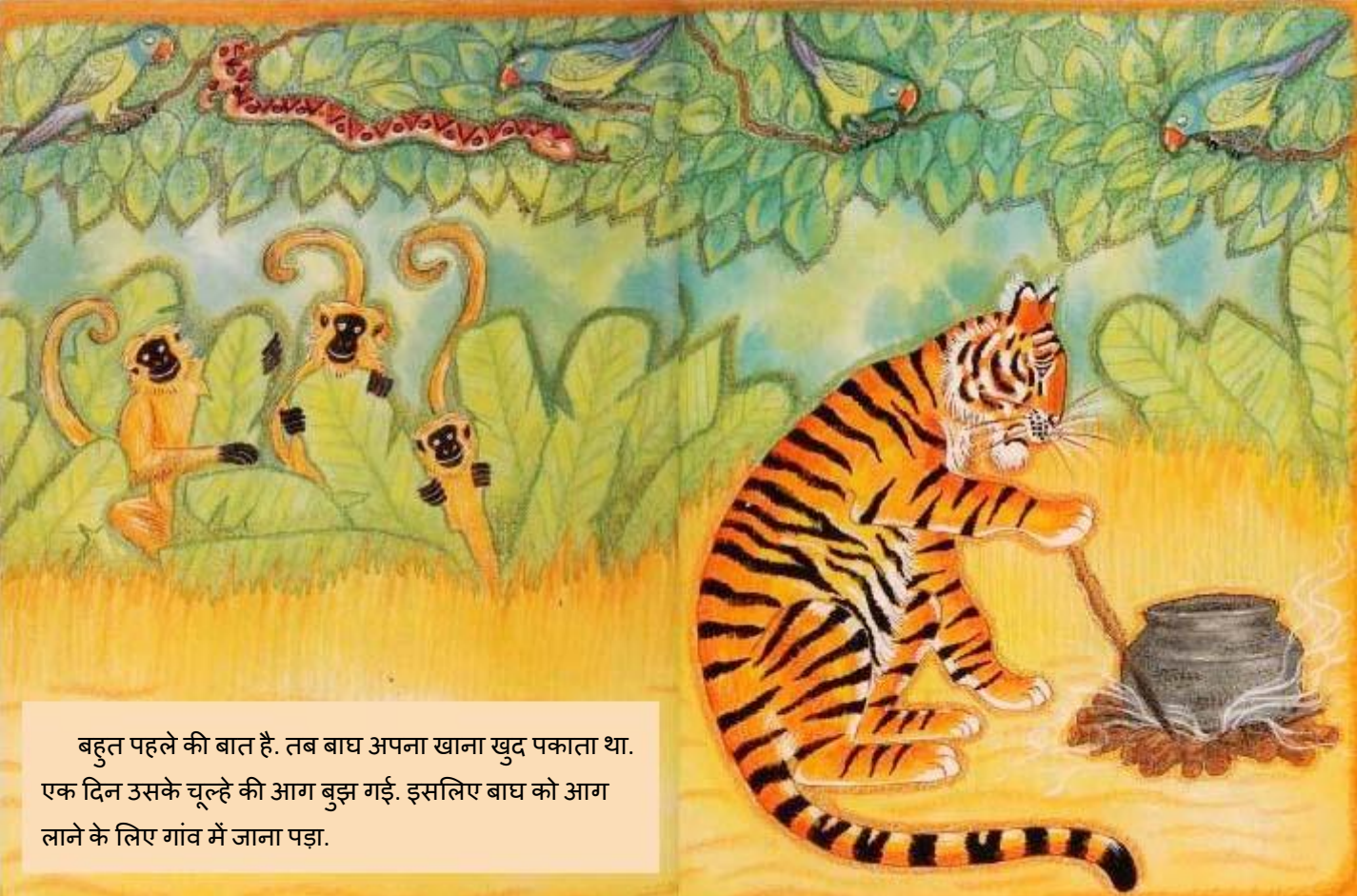
बहुत पहले की बात है. तब बाघ अपना खाना खुद पकाता था. एक दिन उसके चूल्हे की आग बुझ गई. इसलिए बाघ को आग लाने के लिए गांव में जाना पड़ा.
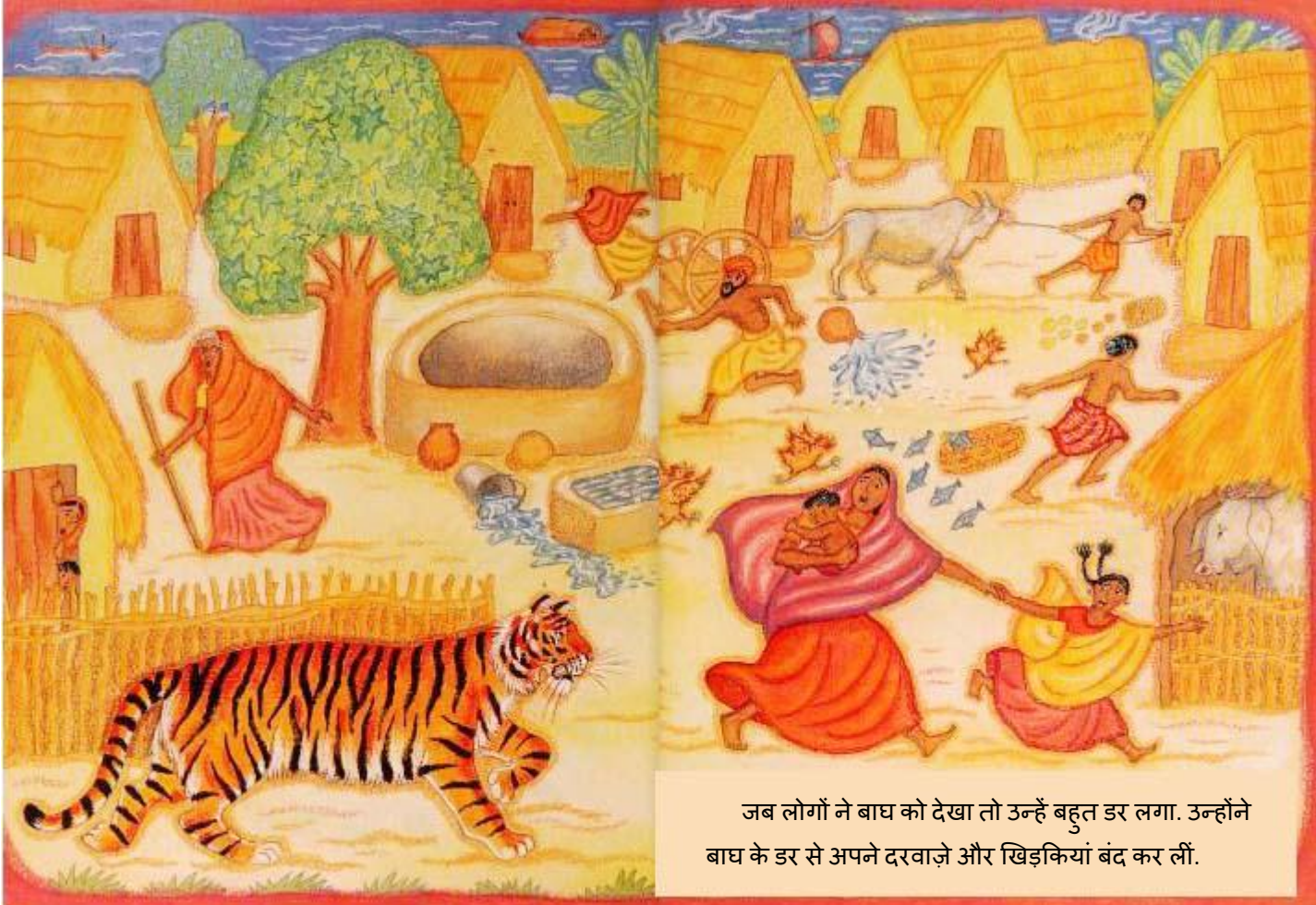
जब लोगों ने बाघ को देखा तो उन्हें बहुत डर लगा. उन्होंने बाघ के डर से अपने दरवाज़े और खिड़कियां बंद कर लीं.

उसके बाद बाघ दुबारा फिर जंगल में लौटा. वो अपनी बहन के घर गया. उसकी बहन का एक बच्चा था.

"देखो, गांव में जाओ और मेरे लिए कुछ आग लेकर आओ," बाघ ने अपने भानजे से कहा. "क्योंकि तुम इतने छोटे हो, इसलिए लोग तुम्हें देख कर डरेंगे नहीं."

बाघ के बच्चे ने अपनी यात्रा शुरू की. पर रास्ते में वो .....

.... बंदरों से खेला .... तालाब में तैरा.....

..... और पेड़ों पर चढ़ा. पर गांव पहुंचते-पहुंचते उसके मामा ने क्या मंगवाया था वो उसके बारे में बिल्कुल भूल गया.
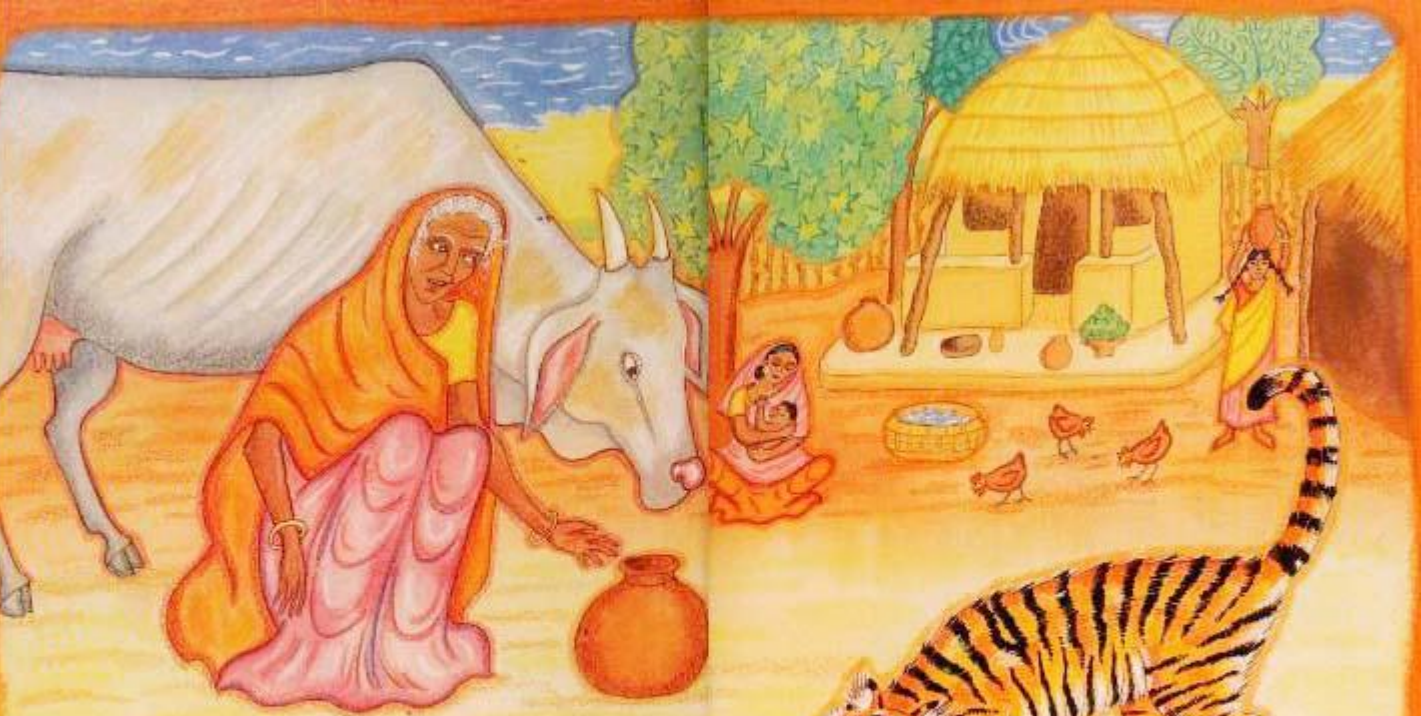
"मैं अपने मामा के लिए गांव से एक चीज़ लेने के लिए आया था," बाघ के बच्चे ने कहा. "पर वो क्या चीज़ थी, यह मैं भूल गया."
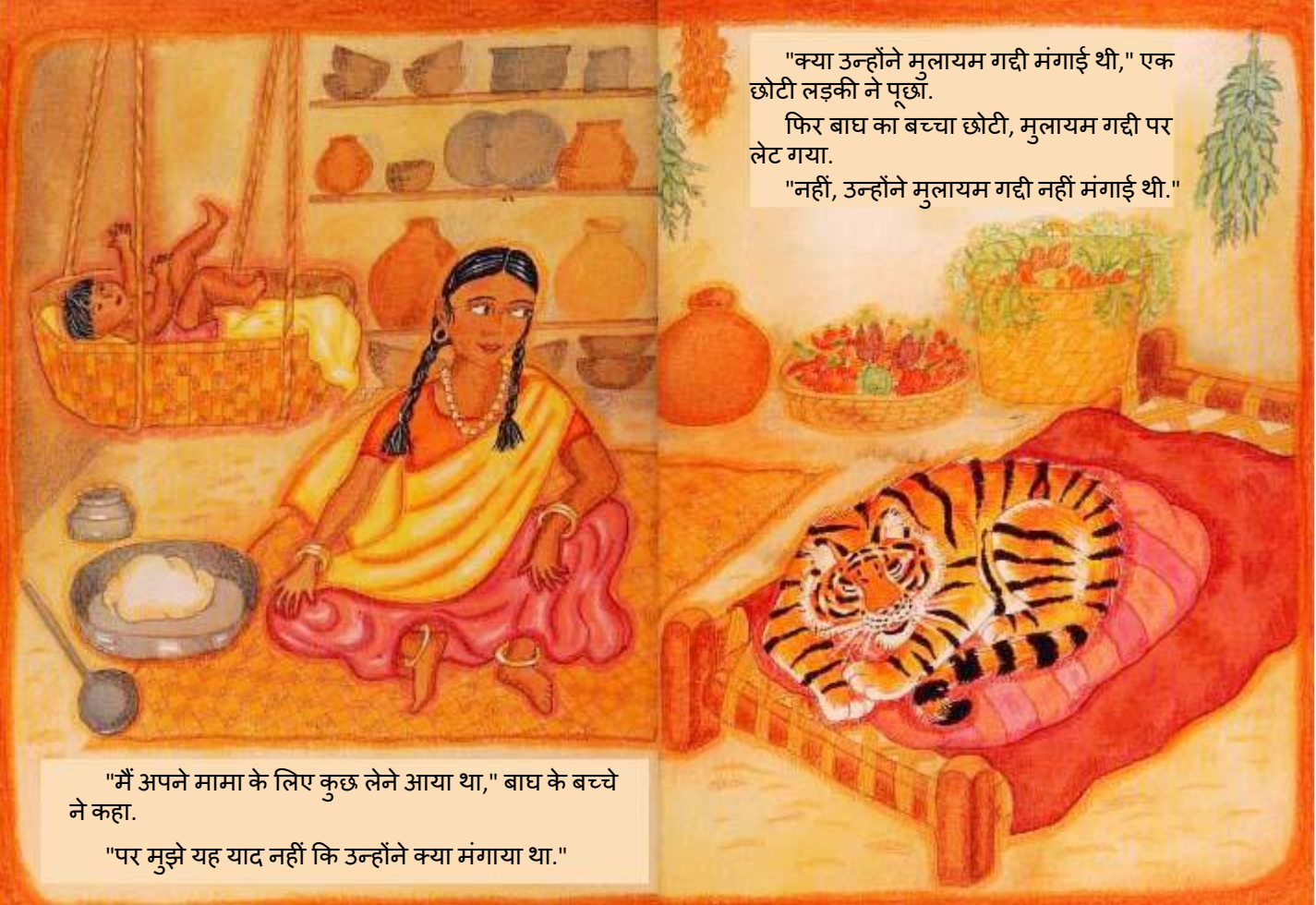
"क्या उन्होंने ताज़ा दूध मंगाया था?" बूढ़ी नानी ने पूछा.

फिर बाघ के बच्चे ने ताज़े दूध का प्याला पिया.

दूध पीने के बाद बाघ के बच्चे ने कहा, "नहीं, उन्होंने दूध नहीं मंगाया था."

"मैं अपने मामा के लिए कुछ लेने आया था," बाघ के बच्चे ने कहा. "पर मुझे यह याद नहीं कि उन्होंने क्या मंगाया था."

"क्या उन्होंने स्वादिष्ट मछली मंगाई थी," लड़के ने पूछा.

फिर बाघ का बच्चा सारी स्वादिष्ट मछलियां खा गया.

"नहीं, उन्होंने मछलियां नहीं मंगाई थीं," उसने कहा.
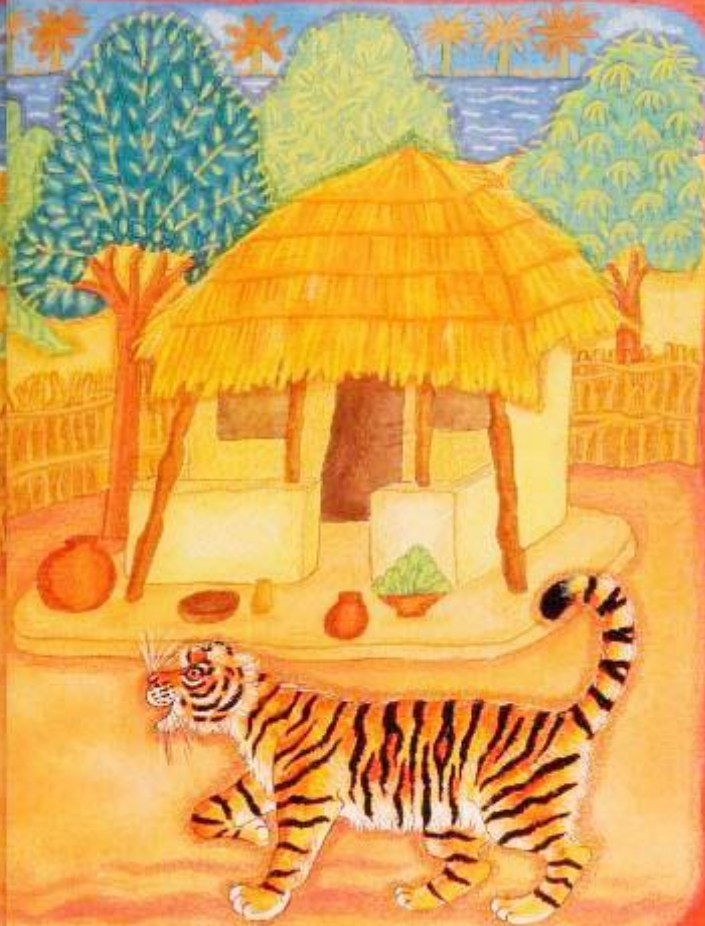
"क्या उन्होंने मुलायम गद्दी मंगाई थी," एक छोटी लड़की ने पूछा.

फिर बाघ का बच्चा छोटी, मुलायम गद्दी पर लेट गया.

"नहीं, उन्होंने मुलायम गद्दी नहीं मंगाई थी."

"मैं अपने मामा के लिए कुछ लेने आया था," बाघ के बच्चे ने कहा.

"पर मुझे यह याद नहीं कि उन्होंने क्या मंगाया था."

"मैं अपने मामा के लिए कुछ लेने आया था," बाघ के बच्चे ने कहा.

"पर मुझे यह याद नहीं कि उन्होंने क्या मंगाया था."

"क्या उन्होंने अपने बालों के लिए महीन कंघी मंगाई थी?" माँ ने पूछा.
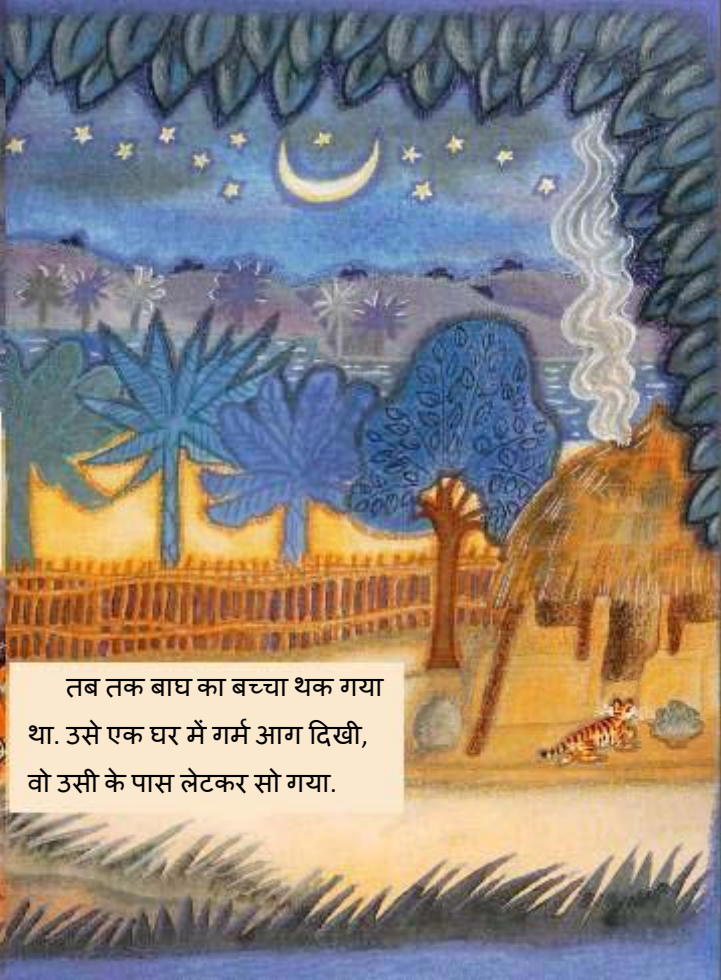
फिर माँ ने बाघ के बच्चे के बालों को कंघी से संवारा.

"नहीं, मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कंघी मंगाई थी."
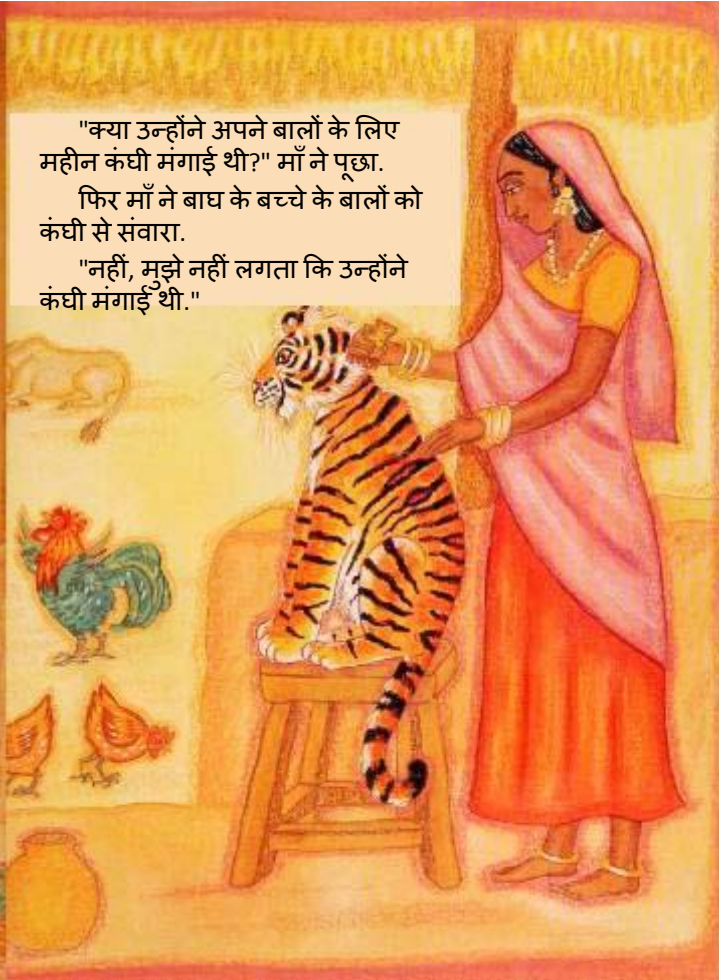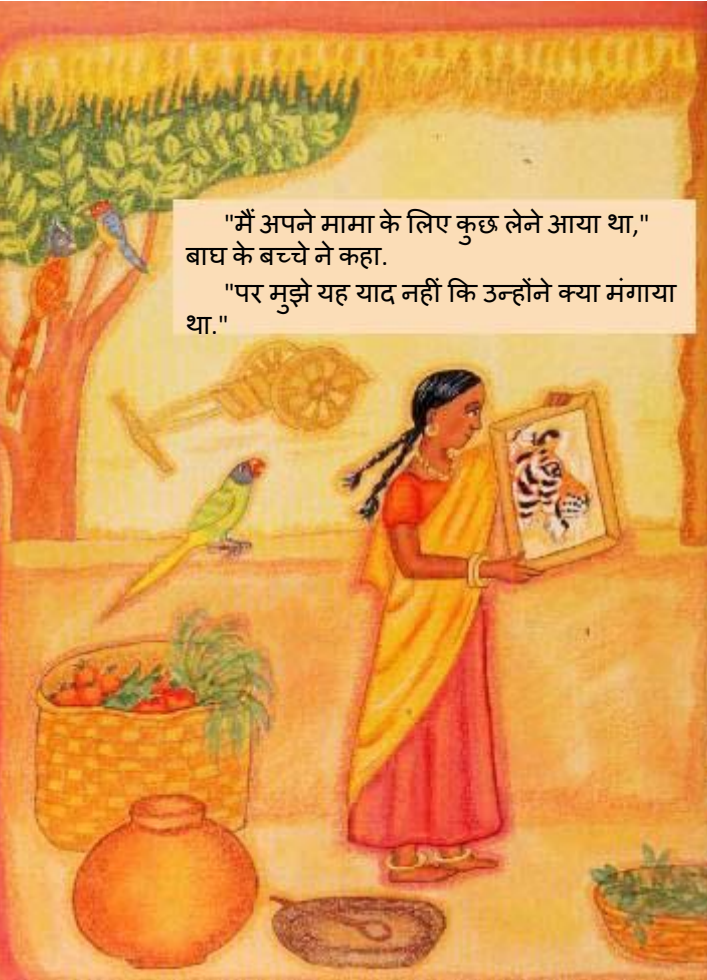
बेचारा बाघ पूरे दिन अपने भानजे के लौटने का इंतज़ार करता रहा. जब सूरज ढल गया और आसमान में तारे निकल आए तब उसने खुद गांव जाने की सोची.

तब तक बाघ का बच्चा थक गया था. उसे एक घर में गर्म आग दिखी, वो उसी के पास लेटकर सो गया.

बड़े बाघ ने खिड़की में से झाँककर देखा. उसका
भांजा बड़े आराम से एक घर में सो रहा था.
"तुमने एक प्याला ताज़ा दूध पिया.
"तुमने खूब स्वादिष्ट मछलियां खाईं.
"तुम मुलायम गद्दी पर लेटे.
"तुम्हारे बालों को किसी ने कंघी से संवारा.
"और अब तुम गर्म अलाव के पास सो रहे हो.
"बाघ के बच्चे, अब तुम बाघ नहीं रहे .....

तुम अब बिल्ली हो!"

फिर बिल्ली नींद खुली. तब उसे याद आया कि मामा ने उससे क्या मंगाया था. उन्हें कुछ आग चाहिए थी! फिर उसने एक जम्हाई ली और दुबारा सो गई.
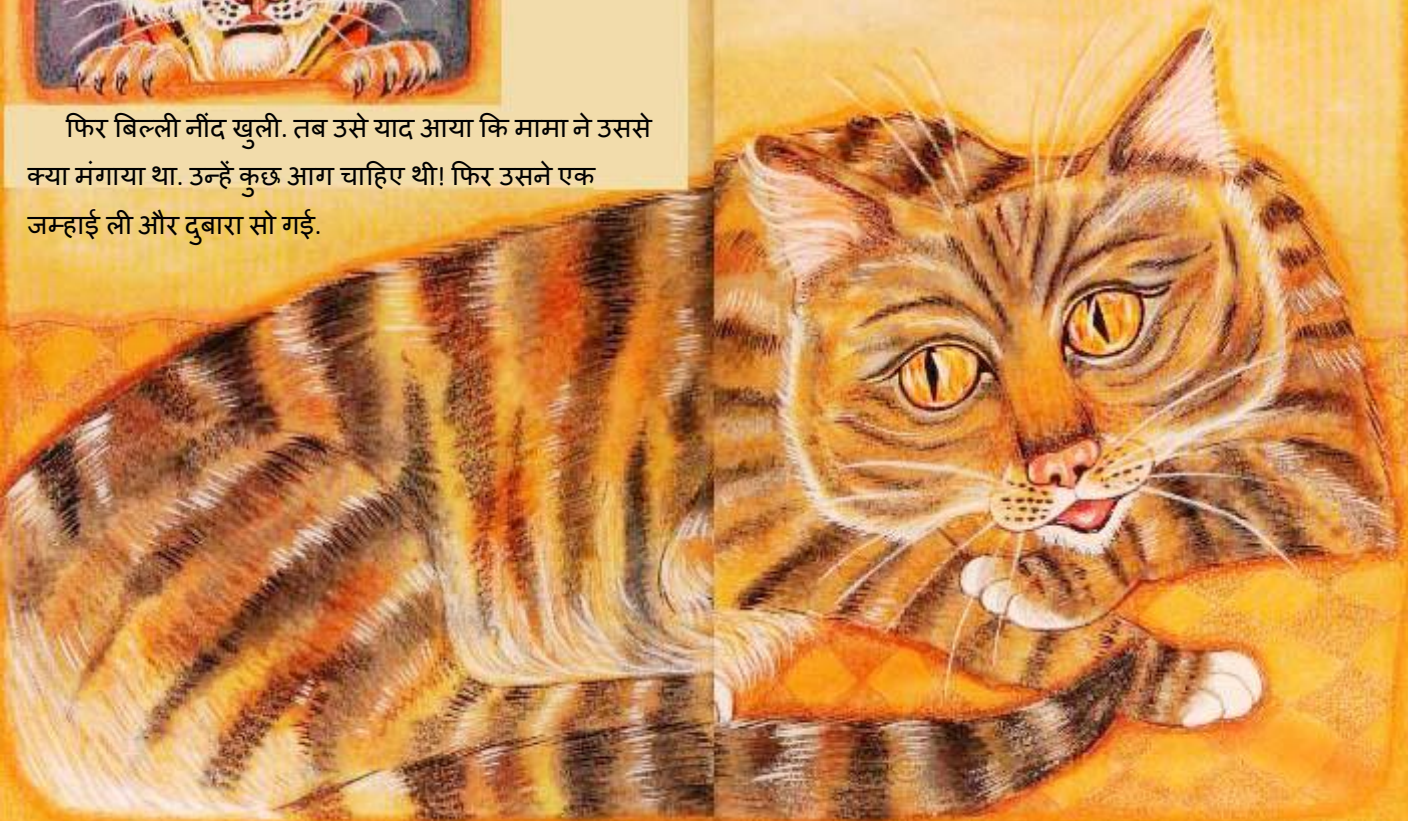
बड़ा बाघ जंगल में लौटा. तब से बाघ के पास कोई आग नहीं है. वो कच्चा खाना ही खाता है.
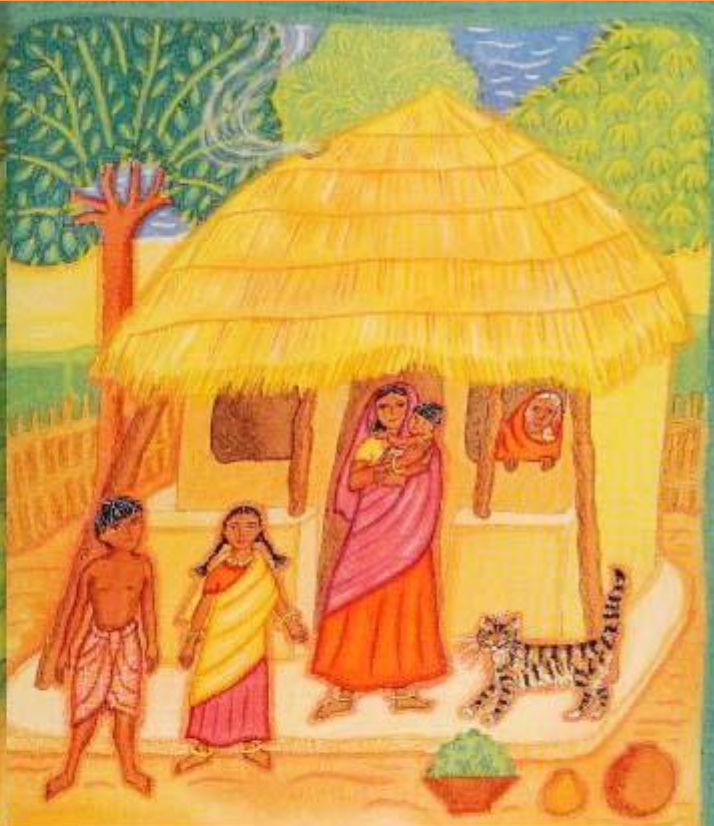
फिर बाघ का बच्चा बिल्ली में बदल गया, और वो हमेशा के लिए गांव में ही रह गया.

तब से बिल्लियां हमेशा इंसानों के साथ रह रही हैं.

अंत